Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

भारतीय सिनेमा उद्योग में छबिग्रहो का विकासक्रम

डॉ. बी.एल. पाटीदार[1] , असि. प्रो. गगन राठौर[2]
[1]प्राध्यापक , शा. अमरशहिद राजाभाउ महाविद्यालय, सौनकच्छ (म.प्र.)
[2]शोधार्थी – विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन , असि. प्रो. – चौइथराम कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, इन्दौर

सारांश :

यह शोधपत्र छबिग्रहों के विकास एवं प्रभावी उपकरण के रूप में संचारित करता है । मनोरंजन के क्षेत्र में रंगमंच को छबिग्रहों का प्रारंभ की एक नीव है । सम्पूर्ण विश्व में भारतीय सिनेमा के विकास की गति बहुत ही तेज गति से हुआ है । ब्रिटिश शासन के राजनेतिक शोषण के समय भारतीय छबिग्रहो ने एक हथियार के रूप में काम किया था । फिल्मों के निर्माण एवं उसे सिनेमाघरों तक पहुचाने में यह भारतीय सिनेमा उद्योग अन्य देशों से कई आगे है । भारत में अनेक संस्कृति, धर्म एवं भाषाओं वाला देश है । कई राज्यों की भाषायें अलग–अलग है । इसलिए भारत मे प्रतिवर्ष फिल्मों का निर्माण कई अलग–अलग भाषाओं में होता है। आज भारत में लगभग हर प्रकार की भाषाओं में फिल्मों का निर्माण हो रहा है । छबिग्रहो के बिना फिल्म उघोग की कल्पना करना आसान नही है । इसके अलावा भी छबिग्रहो का योगदान न केवल मनोरंजन बल्कि शिक्षा, मनोरंजन, समाजीकरण, बहस–चर्चा का मंच आदि के रूप में उपयोग में आता रहा है । इस उघोग के तेजी से विकास के देखते हुए शिक्षा जगत में भी विश्वविघालयों द्वारा नये कोर्स का निर्माण किया जा रहा है । मनोरंजन के क्षेत्र में शोधकार्य भी तेजी से हो रहा है । इस शोधपत्र में छबिग्रहों का विकासक्रम के साथ–साथ वर्तमान स्थिति को भी प्रकट किया गया है ।

प्रस्तावना –

मनोरंजन का क्षेत्र हमें एक तीसरी दुनिया के बारे में बताता है । जो हमारी वास्तविक दुनिया के साथ हमारी सोच व कल्पनाओं को साकार रूप देकर हमें एक नई दुनिया की ओर ले जाती है । कई फिल्म सम्पूर्ण समाज के परिदृश्य को दर्शाती है, । मनोरंजन के क्षेत्र में रंगमंच को छबिग्रहों का प्रारंभ की एक नीव है । फिल्म की कल्पना बिना छबिग्रहो के नही की जा सकती है । छबिग्रहों का प्रारंभ ग्रीस एवं रोमन से माना जाता है । भारत के छबिग्रहो इसकी संस्कृति के स्वरूप दिखाई देते है । ब्रिटिश शासन काल में छबिग्रहो के स्वरूप में भी इनकी संस्कृति ने छाप छोडी है । पुराने छबिग्रहों में आकार, बनावट से इसे आसानी से हम देख सकते है । इसी तरह ब्रिटिश शासन के राजनेतिक शोषण के समय भारतीय छबिग्रहों ने एक हथियार के रूप में काम किया था । छबिग्रह अपने लचीलापन एवं सहभागिता के लिए प्रासंगिक है । छबिग्रहो की भुमिका न केवल फिल्मों के लिए होती है बल्कि यह इन छबिग्रहो का उपयोग भारतीय आंदोलन को नाटकिय रूप से प्रस्तुत करने में भी किया गया । स्वतंत्रता के पश्चात भारत के विकास के समय हरितक्रांति, श्वेतक्रांति, समाज के कुरूतियों से लड़ने के लिए, लिंग भेदभाव, बाल मजदूरी, साक्षरता अभियान, पल्स पोलियो, महिला सशक्तिकरण, परिवार नियोजन, इचआईवी–एड्स रोकथाम, पर्यावरण प्रदुषण आदि ऐसे अभियान है । यह शोधपत्र हमें छबिगृहों की भूमिका एवं उसकी उपयोगिता को दर्शाता है । सन् 1940 दशक के प्रारंभ में शोधकर्ता यह मानते थे कि मीडिया व छबिग्रहो के विकास में वृद्धि हो सकती है । परंतु पारम्परिक लोक मीडिया एवं छबीग्रहो का विकास में ज्यादा परिवर्तन देखने का नही मिल पाया । सन् 1970 के दशक में विकास संचार की अवधारणा ने रूप लेना प्रारंभ किया । जिसमें पारम्परिक एवं समूह संचार सम्मिलित थे । इसी तरह छबिग्रहो ने भी अपने पारम्परिकता प्रदर्शनकारी कला की स्थिति को समाज के लिए प्रासंगिक बनाते हुए अपनी स्थिति के स्वरूप को बदला है ।

साहित्य समीक्षा –

शोधपत्र ''स्टडी आन प्रमोशनल स्ट्रेटेजिस आफ सिलेक्टेड बंगाली मुविस इन 2014'' में लेखक द्वारा मल्टीफ्लेक्स उद्योगो का छबीगृह का प्रभाव रायपूर सिटी के संदर्भ में बताया गया था । इस षोधपत्र का मुख्य उद्देष्य बाजार व्यूहरचना का अनुमान लगाना, सोषल मिडिया का प्रभाव, फिल्म का प्रोडक्शन, उसका प्रमोषन के साथ–साथ सिंगल स्क्रिन (पारम्परिक) छबीगृह, मल्टीफ्लेक्स छबीगृह में दर्षकों का अनुमान, डिजिटलाईजेशन व फिल्म की आय से सम्बंधित है । इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य बंगाली फिल्म के प्रमोशन की व्यूहरचना बनाना है । इस हेतु आंकड़ो व जानकारी का संग्रहण प्राथमिक व द्वितीयक दोनो ही प्रकार से किया गया है । उपरोक्त शोधपत्र में बंगाली फिल्म के प्रमोशन के लिए किस प्रकार की व्यूहरचना बनाई जाये जिससे बंगाली फिल्म अधिक से अधिक लोकप्रिय हो सके । इसमें लेखक द्वारा अनेक प्रकार के प्रमोशन की बात कही गयी है । इसी के साथ–साथ दर्शको के उत्साह व फिल्म को देखने के लिए चुने जाने वाले पारम्परागत छबीगृह व मल्टीफ्लेक्स छबीगृह का आबंटन केसै किया जाना चाहिये यह जानकारी दी गयी । लेखक ने अपने उपसंहार में बंगाली फिल्म के प्रमोशन में होने वाली प्रमुख गतिविधियों को संक्षिप्त में बताया गया है ।

उपरोक्त शोधपत्र ''ए स्टडी आन इम्पेक्ट आफ मल्टीप्लेक्स इन्डस्ट्री ओवर सिनेमा हाल विथ स्पेशल रिफरेन्स टु रायपुरसिटी'' में लेखक द्वारा बंगाली फिल्म के प्रमोशनल रणनिति के संदर्भ में बताया गया था । इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों का मल्टीफ्लेक्स से व्यवहार में परिवर्तन, उनकी

रूचि, ब्रांड के प्रति ग्राहकों की जानकारी तथा मल्टीफ्लेक्स में ग्राहकों द्वारा जाने के कारण का पता लगाना था । इस हेतु आंकड़ो व जानकारी का संग्रहण प्राथमिक व द्वितीयक दोनो ही प्रकार से किया गया है । प्राथमिक आकड़ो व जानकारी का संग्रहण 100 व्यक्तियों से प्रश्नोत्तरी के माध्यम से व द्वितीय आकड़ो व जानकारी का संग्रहण मीडिया, बुक व इन्टरनेट के माध्यम से किया गया । जिसमें उन्होने विश्व में प्रथम मल्टीफ्लेक्स की शुरूआत से लेकर भारत में मल्टीफ्लेक्स की शुरूआत को बताया गया है । उन्होने आगे अपने शोधपत्र में पी.वी.आर., आई.नोक्स व रिलायंस मिडीया वर्क्स द्वारा विगत 2011–12 से 2014 के दो त्रेमासिक के आंकड़ो का दर्शाते हुए कई महत्वपूर्ण जानकारी जानने के कोशिश की गयी । अतः उपरोक्त शोधपत्र को पढ़ने के उपरांत हम यह कह सकते है कि शोधपत्र में कई महत्वपूर्ण जानकारी का समावेश है जो कि रायपूरसिटी के साथ–साथ सम्पूर्ण भारतदेश के लिए उपयोगी होगी ।

उपरोक्त शोधपत्र में 'ए स्टडी आन रिटेल स्पेस एनालिसेस आफ इन्टरटेंमेन्ट इन्ड्रस्ट्री' लेखक द्वारा मनोरंजन के क्षेत्र में मॉल में अवसरों का पता लगाने के संदर्भ में है । इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य ग्राहकों द्वारा विभिन्न मॉलों में जाकर मनोरंजन की प्राथमिकता का पता लगाना है । इस हेतु आंकड़ो व जानकारी का संग्रहण प्राथमिक व द्वितीयक दोनो ही प्रकार से किया गया है । प्राथमिक आकड़ो व जानकारी का संग्रहण 10 मॉल के 200 ग्राहकों से प्रश्नोत्तरी के माध्यम से, ईमेल, टेलीफोन व सीधे संपर्क करके प्राप्त किये गये है तथा द्वितीय आकड़ो व जानकारी का संग्रहण मीडिया, बुक व इन्टरनेट की विभिन्न साईट्स के माध्यम से किया गया । उपरोक्त शोधपत्र में लेखक द्वारा सर्वप्रथम रिटेल सेक्टर की संक्षिप्त जानकारी के साथ विभिन्न क्षेत्रो में इसके विकास तथा भारत में विभिन्न मॉल में रिटेल की भूमिका को समझाया गया है । इसी के साथ–साथ मॉल के मनोरंजन के क्षेत्रो का भी बताया गया है । प्रत्येक मॉल में मनोरंजन के लिए उपयुक्त जगह रहती है जिसमें गेम्स के साथ फिल्मों का प्रसारण भी किया जाता है । उपरोक्त शोधपत्र में लेखक द्वारा स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि यदि मल्टीफ्लेक्स में कोई अच्छी फिल्म लगी हो तो इससे मॉल में ग्राहकों की संख्या अधिक हो जाती है जिससे मॉल में उपस्थित अन्य क्षेत्रों को भी लाभ होता है ।

उपरोक्त शोधपत्र ''ट्रेन्ड एंड पोटेशनल आफ द इण्डियन इन्टरटेन्मेंट इन्ड्रस्टी – एन डेप्थ एनालिसेस'' में लेखक द्वारा मीडिया एवं मनोरंजन उद्योग के क्षेत्र में भारत में पृवत्तियों एवं संभावनाओं के संदर्भ में है । उपरोक्त शोधपत्र में लेखक द्वारा (के.पी.एम.जी. रिपोर्ट के अनुसार)भारत में प्रतिवर्ष मीडिया एवं मनोरंजन के क्षेत्र 20 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहा है । मनोरंजन के क्षेत्र में वृद्धि के प्रमुख कारणों में जनसख्या, शिक्षा का वृद्धि, जीवन स्तर मे वृद्धि, मनोरंजन के प्रति रूचि, सरकार का सहयोग, तकनिकों का विकास आदि । शोधप्रत्र में वर्तमान में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया के साथ–साथ पब्लिकेशन को भी विस्तार से समझाया गया है तथा भारत फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सबसे बड़ा उद्योग बन गया है । यहा लगभग 1000 फिल्म प्रतिवर्ष निर्माण हो रहा है जो की 52 भाषाओं में निर्माण होता है और इस फिल्म को देखने के लिए 3.7 बिलियन टिकट का विक्रय होता है तथा यह लगभग 60 लाख लोगो को रोजगार प्रदान कर रहा है । फिल्म उद्योग के चेलेन्जेस को बताते हुए युनेस्को की रिपोर्ट में भारत में छबीगृह (स्क्रीन) की कमी को भी बताया गया । शोधपत्र में छबीगृह व मल्टीप्लेक्स में किये गये विनियोगों को बताया कि सरकार द्वारा मनोरंजन के क्षेत्र में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ला रही है । जिससे इसके विकास में तीव्रता आ रही है । लेखक द्वारा तत्पश्चात टी.वी., म्यूजिक, रेड़िया, एनिमेशन के क्षेत्र को भी विस्तारित करते हुए अपने निष्कर्ष में भारत में मनोरंजन के क्षेत्र में बढ़ते हुए सरकार द्वारा किये जा रहे अनुबंध व आई.टी. के विकास से भी इस क्षेत्र का विकास हो रहा है ।

शोध क्रियाविधि –

शोधपत्र में द्वितीय समंको के आधार पर बनाया गया है । जिसमें सम्बंधित पुस्तके, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्र व इलेक्ट्रानिक माध्यमों से सामग्री जुटाई गई है ।

छबिग्रहो के विकास अवलोकन –

विचारो, राय, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए, विश्वास दिलाने के लिए, अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए छबिग्रहों का प्रमुख स्थान है । छबिग्रहों का इतिहास 550 बीसी से 220 बी.सी. के बीच ग्रीस से माना जाता है । जिसे पहले सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों के लिये उपयोग में लाया जाता था । हजारों सालो में छबिग्रहों में सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण के परिपेक्ष्य में कई परिवर्तन होते रहे है । छबिग्रहों के विकासक्रम में कई प्रकार से छबिग्रहो में परिवर्तन होता रहा है जैसे सामुहिक छबिग्रह, ग्रामीण विकास हेतु निर्मित छबिग्रह, सड़क छबिग्रह, जेल छबिग्रह, गुरिल्ला छबिग्रह, अभियान छबिग्रह आदि । छबिग्रहो के विकास की अवधारणा का उदय हुआ । ग्रीस एवं युरोप में छबिग्रहो के विकास के दौरान यह एशिया में सबसे पहले भारत में अपने कदम रखे । 1000 ए.डी. में मनोरंजन के क्षेत्र में छबिग्रह का स्वरूप कई तरह से ग्रीक एवं रोमन से पुरी तरह से प्रभावित था । मनोरंजन के क्षेत्र एवं छबिग्रहो का विकास विकसित देशों में भी उतनी तेजी से नही हुआ । जितनी तेजी से अन्य क्षेत्रो का विकास हुआ है । जब विकसित देशो में मनोरंजन क्षेत्र एवं छबिग्रहो का विकास होना प्रारंभ हुआ उसके उपरांत ही विकसित देश अन्य विकासशील देशों के बीच व्यापारिक व अन्य संबंधो से जुड़े तो छबीग्रहों की विकास की प्रक्रिया विकासशील देशो में होना प्रांरभ हुआ । विकसित देशो द्वारा अपने व्यापार को अन्य दशों में फैलाने के लिए छबिग्रहों का उपयोग उसी देश की लोकल भाषा के द्वारा किया जाता रहा है । जिससे वे अन्य देशो में अपना व्यापार सहजता से कर सके । इस तरह विकासशील देशों में मनोरंजन व छबिग्रहो का विकास होना स्वीकार्य किया जा सकता है । भारत देश मनोरंजन का क्षेत्र का इतिहास बहुत ही प्राचीन है । भारत की सभ्यता, भाषा, संस्कृति में इसके तथ्य हमें मिलते है । छबिग्रहो का भारत में विकास नाट्य, शास्त्रीय संगीत के लिए भारत की लोकप्रिय भाषाओं में प्रचलित हुआ । ब्रिटिश काला के दौरान छबिग्रह में रोमन, ग्रीक के साथ में ब्रिटिश संस्कृति का स्वरूप से भी भारतीय छबिग्रह प्रभावित हुआ । इस तरह से छबिग्रह दो प्रकार से व्यावसायिक छबिग्रह एवं गैर व्यावसायिक छबिग्रह में रूप में सामने आये । सन् 1970 के दश्क के पहले छबिग्रहो में एक बड़े स्क्रीन के पास दिवार के उपर चढ़कर (छत पर), वक्ताओं के माध्यम से संवाद, ध्वनि व संगीत खेला जाता था । उसके बाद सबवोफर का उपयोग करके इसका उपयोग किया जाने लगा । उसके बाद रिल का उपयोग किया जाने लगा । चेन्नई में भारत का सबसे पुराना फिल्म स्टुडियो ए.वी.एम. स्टुडियोज है । भारत में फिल्मों को लाने वाले फिल्मी दुनिया जनक दादा साहेब फाल्के द्वारा सन् 1913 में राजा हरिशचंद्र फिल्म का निर्माण किया था । रघुपति वैंकया नायडू पहले भारतीय कलाकार थे जिन्होने सबसे पहले फिल्मों का निर्माता 1909 में प्रारंभ किया था । इन्हे तमिल फिल्मों का जनक भी कहा जाता है । उन्होने इस क्षेत्र में बहुत काम किया, कई यात्रायें कि और मद्रास में सबसे पहला सिनेमा हॉल का निर्माण करवाया जिसके मालिक भी यही थे । भारत में पहली चलित फिल्म आलम आरा का निर्माण नटराजा मुदायलर ने किया । जिन्होने मद्रास में दक्षिण भारतीय स्टुडियों की स्थापना की । बीसवी शताब्दी के शुरूआत में छबिग्रहों को भरने के लिए टीकट की दर सस्ती रखी गयी । आरामदायक सीटों के लिए अतिरिक्त दाम लिये गये । फिल्मों के चलन को बढ़ाने के लिए सामाजिक जीवन व संस्कृति को फिल्मों में शामिल करने लगे । जिससे इसका विस्तार तेजी से बढ़ने लगा । विदेशीयों द्वारा भी भारत में फिल्म उद्योग बाजार क्षेत्र में रूचि लेने प्रारंभ किया । स्वतंत्रता के बाद भारत में एस.के. आयोग कमेटी बनायी गयी थी जिसके द्वारा फिल्म उद्योग क्षेत्र की जांच की गयी । इसी आयोग ने ही फिल्म वित्त आयोग की स्थापना की सिफारिश दी गयी थी । इसी तरह कनाड़ा सन 1957 में पहला देश था जिसने दो

स्क्रीन वाला छबिग्रह बनाया था । कनाड़ा के टेलर को मल्टीप्लेक्स, सिनेप्लेक्स का अविष्कारक माना जाता है । उसके बाद युनाईटेड स्टेट्स ने 1963 में मल्टीस्क्रीन छबिग्रहो के निर्माण होता रहा । छबिग्रह के विकास में कई प्रकार के छबिग्रहो का निर्माण होता रहा है जैसे – ड्राइवइन छबिग्रह, आउटडोर छबिग्रह, टुडी, थ्रीडी, फोरडी, आईमेक्स आदि । सन् 1990 में भारत में उदारीकरण की निति अपनाने से मनोरंजन के क्षेत्र में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आया था । उदारीकरण से ही विदेश व्यापार के साथ–साथ उनकी संस्कृति का प्रभाव भी मनोरंजन के क्षेत्र में फिल्मों पर पड़ा, छबिग्रहों के स्वरूप में भी परिवर्तन देखने का मिला । पी.वी.आर. सिनेमाघर भारत की सबसे बड़ी सिनेमा श्रृंखला में से एक है । सन् 2010 में डिजिटाईलेशन सिनेमा का विकास होने लगा । वर्तमान में लगभग सभी छोटे–बड़े छबिग्रह आधुनिक रूप से सुसज्जीत हो गये है । वर्तमान में (2016 के आंकड़ो के अनुसार) भारत में लगभग 6000 सिंगल स्क्रीन, 2100 मल्टीस्क्रीन छबिग्रह है । जिसमें वर्ष 2014 के अनुसार 1969 फिल्म विभिन्न भारतीय भाषाओं में निर्मित हुई है ।

निष्कर्ष –

शोधपत्र के माध्यम से छबिग्रहो का विकास क्रम में यह बताया गया है कि छबिग्रह किस तरह से प्रांरभ होकर समय–समय पर अनेक दशको तक इसमें परिवर्तन होते रहे है यह परिवर्तन सामाजिक, राजनेतिक, सांस्कृतिक आदि अनेक तरिकों से इसके रूप, कार्य, विधि आदि में परिवर्तन रहे है । छबिग्रह ने आधुनिक स्वरूप को भी अपना लिया है । आज लगभग सभी जगहों पर छबिग्रहो का कार्य डिजिटलाईजेशन के द्वारा हो रहा है । युग जिस तरह से परिवर्तर्तित हो रहा है उसी अनुरूप मनोरंजन का क्षेत्र भी एवं छबिग्रह भी अपने स्वरूप में परिवर्तन ला रहा है ।

ग्रंथसुची –

http://etd.lsu.edu/docs/available/etd-0612103-170849/unrestricted/Burleson_dis.pdf
http://www.caluniv.ac.in/global-mdia-journal/COMMENTARY-DEC%202013/Commentary_9_Priyam_Basu_Thakur.pdf
https://www.ibef.org/economy/economic-survey-2015-16
https://en.wikipedia.org/wiki/Movie_theater#Magic_lantern_shows
http://en.wikipedia.org/wiki/Theatre_of_ancient_Greece http://en.wikipedia.org/wiki/Theatre_of_India
http://en.wikipedia.org/wiki/Paulo_Freire http://en.wikipedia.org/wiki/Theatre_of_India
http://en.wikipedia.org/wiki/Indian_People's_Theatre_Association
http://en.wikipedia.org/wiki/Safdar_Hashmi
http://en.wikipedia.org/wiki/Bijon_Bhattacharya http://en.wikipedia.org/wiki/Nabanna_(drama)
http://www.cwu.edu/~robinsos/ppages/resources/Theatre_History/Theahis_1.html
http://www.spunk.org/texts/art/sp000338.html
http://www.teaterunionen.se/Pdf/Theatre%20for%20development
http://pib.nic.in/feature/fe0399/f3003991.html
Varadpande-'History of Indian theatre'(Abhinav Publications,2005)
Epskamp-'Theatre for development:An introduction to context, application and training'(Zed Books,2006)
https://www.linkedin.com/pulse/multi-screen-vs-single-screen-which-kind-theatre-makes-atanu-dhar
https://en.wikipedia.org/wiki/Cinema_of_India

डॉ. बी.एल. पाटीदार
प्राध्यापक , शा. अमरशहिद राजाभाउ महाविद्यालय, सौनकच्छ (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/